सोऽपश्यत्प्रणिधानेन सन्ततेः स्तम्भकारणम् ।

भावितात्मा भुवो भर्तुरथैनं प्रत्यबोधयत् ।।74।।

अन्वय भावितात्मा सः प्रणिधानेन भुवः भर्तुः सन्ततेः स्तम्भकारणम् अपश्यत् अथ एनं प्रत्यबोधयत्।

अनुवाद महर्षि वशिष्ठ समाधि द्वारा शुद्ध चित्त होकर पृथ्वी के स्वामी दिलीप की सन्तान के न होने का कारण जाने गये और फिर उसे इस प्रकार कहने लगे।

टिप्पणियाँ

भावितात्मा भावितः आत्मा यस्य सः (बहुव्रीहि), ऋषि का विशेषण। (वह ऋषि) जिसका अन्तःकरण ध्यान के कारण शुद्ध है। भावय् का अर्थ है अशुद्धताओं से मुक्त शुद्धचित्त ऋषि। भावित शुद्ध, आत्मा हृदय, शुद्ध हृदय।

प्रत्यबोधयत् प्रति धातु बुध् णिच् लङ्, अन्य पुरुष, एकवचन, सूचित किया (दिलीप को) बताया, कहा।

प्रणिधानेन एकाग्र मन द्वारा, ध्यान द्वारा, । प्र नि धातु धा ल्युट् तृतीया (एकवचन)। सूत्र है करणे तृतीया (अर्थात् करण या साधन में तृतीया का प्रयोग होता है)।

सन्ततेः सम् धातु तन् क्तिन् षष्ठी एकवचन। सन्तति अर्थात् सन्तान का (स्तम्भ कारण)

स्तम्भकारणम् स्तम्भ् घञ्, स्तम्भस्य कारणमिति स्तम्भकारणम् षष्ठी तत्पुरुष)। (राजा की सन्तान के) स्तम्भन (अवरोध) का कारण।

एनम् गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थ शब्दकर्माकर्मकाणामणिकर्त्ता स णौ से द्वितीया। यहाँ प्रत्यबोधयत् 'बुद्ध्यर्थक' धातु है।